समयसार प्रश्नोत्तरमाला

गाथा – 19 से 38 तक

भाग 2

– डॉ. शुद्धात्मप्रभा टड़ैया

समयसार प्रश्नोत्तरमाला

(समयसार अनुशीलन के आधार पर)

(गाथा 19 से 38 तक)

भाग–2

लेखिका

विद्वत्रत्न डॉ. शुद्धात्मप्रभा टड़ैया

बी.ए.ऑनर्स, एम.ए., पी.एच.डी. (स्वर्णपदक प्राप्त)

मो. 09321295265 / Email: dpptmumbai@gmail.com

मुंबई (महाराष्ट्र)

प्रकाशक :

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट

ए–4, बापूनगर, जयपुर – 302015

फोन : (0141) 2705581, 2707458

E-mail : ptstjaipur@yahoo.com

● **प्रथम संस्करण** : 1 हजार
(03 अप्रैल, 2023) महावीर जयंती के अवसर पर
मूल्य : **आठ रुपये**

प्रकाशकीय

प्रस्तुत पुस्तक 'समयसार प्रश्नोत्तरमाला भाग-2' की लेखिका डॉ. शुद्धात्मप्रभा टड़ैया विद्वत्ता की दृष्टि से वे पिताश्री डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल के पदचिन्हों पर ही चल रही हैं। उनके द्वारा अभी तक छोटी-बड़ी 56 पुस्तकें लिखी जा चुकी हैं। जिनकी सूची आगे प्रकाशित की गई है।

साथ-ही-साथ आपने जैन सिद्धान्तों पर आधारित अनेक 'गेम्स' भी बनाए हैं, जिनके खेलने के नियम भी जैन सिद्धान्तों का ज्ञान कराते हैं। इन 'गेम्स' की विशेषता यह है कि इनको खेलने से बच्चों को सैद्धान्तिक ज्ञान के साथ-साथ अहिंसात्मक आचरण की प्रवृत्ति भी सहज विकसित हो जाती है। इनमें जीत हिंसात्मक कार्य मार-पीट से नहीं, ज्ञान-ध्यान से हासिल की जाती है। बच्चों को ज्ञान-ध्यान करने की प्रेरणा मिलती है।

आपके द्वारा लिखी गई बाल पुस्तकें भी अद्यावधि (अब तक) जैन समाज में प्रचलित अन्य पाठ्यपुस्तकों से भिन्न शैली, रंगीन चित्रमय प्रस्तुति एवं मूल तत्वज्ञान के समावेश के कारण अपनी विशिष्ट पहचान रखती हैं।

प्रस्तुत पुस्तक भी उसी अभिरुचि का परिणाम है। सभी पाठक समयसार को सरलता से हृदयंगम कर सकें - इस भावना से प्रस्तुत पुस्तक का प्रकाशन किया जा रहा है। शीघ्र प्रकाशन व्यवस्था के लिए डॉ. अखिल बंसलजी का बहुत आभार है।

– विपिन जैन 'शास्त्री', मुम्बई
प्रकाशन मंत्री

टाइपसैटिंग :
त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स,
ए-4, बापूनगर, जयपुर

मुद्रक :
देशना कम्प्यूटर 60 पूनम विहार
जगतपुरा, जयपुर

समयसार प्रश्नोत्तरमाला भाग - 2
(समयसार अनुशीलन के आधार पर)

गाथा – 19

प्रश्न 1 बुद्धि कितने प्रकार की हाती हैं? नाम बताइए।

उत्तर : बुद्धि चार प्रकार की होती हैं –
1) अहंबुद्धि(एकत्वबुद्धि) 2) ममत्वबुद्धि(स्वामित्वबुद्धि)
3) कर्तृत्वबुद्धि 4) भोक्तृत्वबुद्धि

प्रश्न 2 अहंबुद्धि किसे कहते हैं?

उत्तर : पर पदार्थों में **यही मैं हूँ** – इसप्रकार की मान्यता को अहंबुद्धि कहते हैं।

प्रश्न 3 ममत्वबुद्धि बुद्धि किसे कहते हैं?

उत्तर : पर पदार्थों में **ये मेरे हैं मैं इनका हूँ** – इसप्रकार की मान्यता को ममत्वबुद्धि कहते हैं।

प्रश्न 4 कर्तृत्वबुद्धि किसे कहते हैं?

उत्तर : **मैं पर पदार्थों का कर्ता हूँ, ये मेरे कर्ता है** – इसप्रकार की मान्यता को कर्तृत्वबुद्धि कहते हैं।

प्रश्न 5 भोक्तृत्वबुद्धि किसे कहते हैं?

उत्तर : **मैं पर पदार्थों का भोक्ता हूँ, ये मेरे भोक्ता है –** इसप्रकार की मान्यता को भोक्तृत्वबुद्धि कहते हैं।

प्रश्न 6 यह जीव कब-तक अज्ञानी रहता है?

उत्तर : जब-तक जीव की कर्म, नोकर्म और कर्म के उदय में होने

वाले विकारी भावों में अहंबुद्धि, ममत्वबुद्धि, कर्तृत्वबुद्धि और भोक्तृत्वबुद्धि रहती है; तब-तक जीव अज्ञानी रहता है।

प्रश्न 7 जीव ज्ञानी कब होता है?

उत्तर : जब यह जीव कर्म, नोकर्म और कर्म के उदय में होने वाले विकारी भावों में अहंबुद्धि, ममत्वबुद्धि, कर्तृत्वबुद्धि और भोक्तृत्वबुद्धि नहीं रखता है; किन्तु मात्र उन्हें जानता है, तो वह ज्ञानी होता है।

प्रश्न 8 भेदविज्ञानमूला किसे कहा गया है और क्यों?

उत्तर : आत्मानुभूति को भेदविज्ञानमूला कहा गया है; क्योंकि भेदविज्ञान के बिना आत्मानुभूति की प्राप्ति नहीं होती।

प्रश्न 9 जीव को पौद्गलिक कर्मों का कर्ता किस नय से कहा जाता है?

उत्तर : अनुपचरित असद्भूत व्यवहारनय से।

प्रश्न 10 जीव को अशुद्धभावों का कर्ता किस नय से कहा जाता है?

उत्तर : अशुद्ध निश्चयनय से।

प्रश्न 11 जीव को शुद्धभावों का कर्ता किस नय से कहा जाता है?

उत्तर : शुद्ध निश्चयनय से।

प्रश्न 12 बंध और मोक्ष की संक्षेप में क्या प्रक्रिया है?

उत्तर : जब जीव देहादिक अजीव में उपादेय बुद्धि से परिणत होता है, तो बंध होता है और जब शुद्ध जीव में उपादेय बुद्धि से परिणत होता है, तो मोक्ष होता है। बंध और मोक्ष की संक्षेप में यही प्रक्रिया है।

गाथा – 20-22

प्रश्न 13 ज्ञानी-अज्ञानी की मूलत: पहचान क्या है?

उत्तर : अपने आत्मा में अपनापन अनुभव करने वाले ज्ञानी हैं और पर में अपनापन अनुभव करने वाले अज्ञानी हैं।

प्रश्न 14 जीवों का अज्ञान क्या है?

उत्तर : परद्रव्यों में एकत्व-ममत्व करना ही जीवों का अज्ञान है।

प्रश्न 15 सम्यग्ज्ञान क्या है?

उत्तर : परद्रव्यों से एकत्व ममत्व तोड़कर अपने आत्मा में एकत्व-ममत्व करना सम्यग्ज्ञान है। अत: इस एकत्व-ममत्व के आधार पर ही ज्ञानी अज्ञानी की पहिचान होती है।

प्रश्न 16 परद्रव्य कितने प्रकार के होते हैं? उनकी विभिन्न अपेक्षाओं को उदाहरण सहित बताइए।

उत्तर : परद्रव्य तीन प्रकार के होते हैं - सचित्त परद्रव्य, अचित्त परद्रव्य और मिश्र परद्रव्य।

गृहस्थ की अपेक्षा माता-पिता, भाई-बहनादि सचित्त परद्रव्य हैं, सोना-चांदी, घर-बार आदि अचित्त परद्रव्य हैं और कपड़े-गहने से युक्त पत्नी आदि मिश्र परद्रव्य हैं।

शुभोपयोगी तपोधन की अपेक्षा शिष्यादि सचित्त परद्रव्य हैं, पिच्छी-कमण्डलु, पुस्तकादि अचित्त परद्रव्य हैं और पुस्तक सहित शिष्य आदि मिश्र परद्रव्य हैं अथवा रागादि भावकर्म सचित्त परद्रव्य हैं, ज्ञानावरणादि द्रव्यकर्म अचित्त परद्रव्य हैं और द्रव्यकर्म-भावकर्म दोनों मिलाकर मिश्र परद्रव्य हैं।

विषय कषाय रहित निर्विकल्प समाधि में स्थित तपोधन की अपेक्षा सिद्ध परमेष्ठी का स्वरूप सचित्त परद्रव्य है, पुद्गलादि पाँच द्रव्य का स्वरूप अचित्त परद्रव्य है और गुणस्थान-मार्गणास्थान जीवसमासादि परिणत संसारी जीव

का स्वरूप मिश्र परद्रव्य है।

यहाँ विशेष ध्यान देने योग्य बात यह है कि गृहस्थ की अपेक्षा वाला उदाहरण ज्ञानी-अज्ञानी सभी पर घटित होगा और शुभोपयोगी व शुद्धोपयोगी वाला उदाहरण मात्र ज्ञानी पर ही घटित होगा। तात्पर्य यह है कि जो गृहस्थ शरीरादि परद्रव्य में आत्म विकल्प करते हैं, वह अज्ञानी हैं और जो गृहस्थ, शुभोपयोगी व शुद्धोपयोगी शरीरादि परद्रव्य में आत्म विकल्प न करके अपने आत्मा को ही निज जानते-मानते हैं, वे ज्ञानी धर्मात्मा हैं, प्रतिबुद्ध हैं।

गाथा 23-25

प्रश्न 17 पुद्गल को आत्मा और आत्मा को पुद्गल क्यों नहीं माना जा सकता? उदाहरण देकर समझाइए।

उत्तर : पुद्गल अचेतन है आत्मा चेतन है। जिसप्रकार प्रकाश और अंधकार का एक साथ रहने में विरोध है। उसीप्रकार चेतन और अचेतन का एक साथ रहने में विरोध है अतः पुद्गल को आत्मा और आत्मा को पुद्गल नहीं माना जा सकता।

प्रश्न 18 व्रत, तप, दया, दान आदि के विकल्प जीव हैं या अजीव? और क्यों?

उत्तर : व्रत, तप, दया, दान आदि के विकल्प अजीव हैं जीव नहीं; क्योंकि यदि यह जीव हो तो जीव से भिन्न नहीं हो सकते; किन्तु यह तो भिन्न हो जाते हैं। दूसरी बात यह की दया, दानादि के रागादि परिणाम अन-उपयोग स्वरूप है। यह स्वयं को अथवा पर को नहीं जानते, इस कारण इन्हें जड़,

अचेतन या पुद्गल भी कहा जाता है। अतः यह दोनों सर्वथा जुदे–जुदे हैं। किसी भी प्रकार से एक नहीं है।

प्रश्न 19 मरणतुल्य कष्ट सहकर भी करने योग्य कार्य क्या है?

उत्तर : पर से भिन्न अपने आत्मा को समझने का उग्र पुरुषार्थ मरणतुल्य कष्ट सहकर भी करने योग्य कार्य है।

प्रश्न 20 क्या आत्मा को समझने में मृत्यु हो सकती है, कष्ट हो सकता है? यदि नहीं, तो ऐसा क्यों कहा गया है?

उत्तर : नहीं, आत्मा को समझने में न कष्ट होता है, न मृत्यु हो सकती है; किन्तु आत्मज्ञान की महिमा और उपयोगिता बताने के लिए मृत्यु की कीमत की बात आचार्य देव ने की है।

प्रश्न 21 देह को पड़ौसी बनकर कैसे देखा जा सकता है और क्यों?

उत्तर : जिसप्रकार हम पड़ौसी को अपना भी नहीं मानते हैं और उससे असद्व्यवहार भी नहीं करते; उसीप्रकार इस देह में एकत्व बुद्धि भी नहीं रखना और इससे असद्व्यवहार भी नहीं करना चाहिए। यदि पड़ौसी का जीवन खतरे में हो तो हम उसकी सुरक्षा करते हैं, उसे जीवनयापन में सहयोग करते हैं; पर उसके लिए अपना जीवन बर्बाद नहीं करते; उसके लिए भोग सामग्री नहीं जुटाते। इसीप्रकार देह की सुरक्षा के लिए शुद्ध सात्विक आहार का ग्रहण अवश्य करना, पर इसके लिए अभक्ष्य आदि का भक्षण नहीं करना चाहिए। इसे शत्रु भी नहीं मानना और घरवाला भी नहीं मानना चाहिए अर्थात् इस शरीर के साथ शत्रु जैसा व्यवहार भी नहीं करना

चाहिए और घरवालों जैसा व्यवहार भी नहीं करना चाहिए; बस पड़ोसी जैसा ही व्यवहार करना चाहिए। अतः इसके लिए जीवन का सर्वस्व समर्पण करना उचित नहीं है, सर्वस्व समर्पण तो निज भगवान आत्मा पर ही करना चाहिए।

प्रश्न 22 आत्मानुभूति सहजसाध्य है या यत्नसाध्य?

उत्तर : आत्मानुभूति सहजसाध्य भी है और यत्नसाध्य भी। वस्तुतः सहजसाध्य और यत्नसाध्य पुरुषार्थ में कोई विरोध नहीं है; क्योंकि आत्मानुभव का पुरुषार्थ सहज ही होता है अथवा सहज होना ही आत्मानुभव का यत्नसाध्य पुरूषार्थ है। जब हमारी दृष्टि में आत्मानुभव अत्यंत उपादेयपने स्थापित हो जाएगा; तब अंतर में रुचि की तीव्रता से अंतरोन्मुखी पुरुषार्थ सहज ही होगा।

प्रश्न 23 25वीं गाथा की टीका में भाव मरण किसे कहा गया है?

उत्तर : मोह भाव की उत्पत्ति को भाव मरण कहा गया है।

प्रश्न 24 सुखी जीवन, शान्त जीवन किसे कहा गया है?

उत्तर : मोह के अभाव को ही सुखी जीवन, शान्त जीवन कहा गया है।

प्रश्न 25 मोह के नाश का उपाय क्या है?

उत्तर : पर से भिन्न, राग से भिन्न, पर्याय से पार, सर्व पर्यायों में एकाकार, गुण-भेद से भिन्न, प्रदेश-भेद से भिन्न, अनन्त-गुणात्मक, असंख्य-प्रदेशी एक भगवान आत्मा में अपनापन स्थापित करना, उसी का विचार करना, मंथन करना, घोलन करना ध्यान करना ही मोह के नाश का उपाय है।

गाथा 26

प्रश्न 26 'देह ही आत्मा है' – अपनी इस मान्यता की पुष्टि में अज्ञानी जीव क्या कुतर्क प्रस्तुत करता है?

उत्तर : 'देह ही आत्मा है' – अपनी इस मान्यता की पुष्टि में अज्ञानी कहता है कि जैन शास्त्रों में देह के गुणों के आधार पर भी तीर्थंकरों एवं आचार्यों की स्तुति की गई है। ऐसी स्थिति में यदि देह को जीव नहीं मानोगे तो वह स्तुति मिथ्या सिद्ध हो जाएगी। अत: हमें देह को ही आत्मा स्वीकार करना चाहिए। इसप्रकार नयविभाग से अपरिचित/अप्रतिबुद्ध शिष्य ने अभी तक उपलब्ध स्तुति साहित्य को आधार बनाकर देह में एकत्व बुद्धि का पोषण किया।

गाथा 27

प्रश्न 27 आत्मा और शरीर के एकपने के कथन किस नय से कहे जाते हैं और क्यों?

उत्तर : आत्मा और शरीर की एक क्षेत्र में एक साथ रहने की अवस्था होने से आत्मा और शरीर के एकपने के कथन व्यवहार नय से कहे जाते हैं।

प्रश्न 28 किस नय से आत्मा और शरीर में एकपना नहीं है और क्यों?

उत्तर : निश्चय नय से आत्मा और शरीर में एकपना नहीं है; क्योंकि उपयोग स्वभावी आत्मा और अनुपयोग स्वभावी शरीर में अत्यन्त भिन्नता होने से एकपना नहीं है।

गाथा 28–29

प्रश्न 29 केवली भगवान की व्यवहार स्तुति और निश्चय स्तुति में

अंतर बताइये।

उत्तर– शरीर के गुणों के आधार पर तीर्थंकर केवली की स्तुति करना व्यवहार स्तुति है और केवली के गुणों के आधार पर उनकी स्तुति करना निश्चय स्तुति है।

प्रश्न 30 भगवान के देहदर्शन को देवदर्शन किस नय से कहा जाता है?

उत्तर– व्यवहारनय से भगवान के देहदर्शन को देवदर्शन कहा जाता है।

गाथा 30

प्रश्न 31 शरीर के आधार पर की गई स्तुति को निश्चय से स्तुति क्यों नहीं माना जाता? उदाहरण सहित बताइए।

उत्तर– जिसप्रकार नगर का वर्णन राजा का वर्णन नहीं होता; उसीप्रकार शरीर के गुणों का स्तवन केवली के गुणों का स्तवन नहीं होता। निश्चय से शरीर के गुण आत्मा के गुण नहीं हो सकते। इसलिए शरीर के आधार पर की गई स्तुति को निश्चय स्तुति नहीं माना जा सकता।

गाथा 31

प्रश्न 32 समयसार में कितने प्रकार की निश्चय स्तुति बताई गई है? नाम बताइए।

उत्तर– समयसार में तीन प्रकार की स्तुति बताई गई है– १ जितेन्द्रिय जिनरूप २.जितमोहरूप ३.क्षीणमोहरूप

प्रश्न 33 जितेन्द्रिय कौन है?

उत्तर– जो इन्द्रियों को जीतकर आत्मा को अन्य द्रव्यों से अधिक (भिन्न) जानते हैं, वे जितेन्द्रिय हैं। इन्द्रियों को जीतना ही प्रथम प्रकार की निश्चय स्तुति है।

प्रश्न 34 आचार्य अमृतचंद्र ने इस गाथा में इन्द्रियों में क्या-क्या शामिल किया है?

उत्तर– इस गाथा में आचार्य अमृतचंद्र ने इन्द्रियों में द्रव्य-इन्द्रियाँ, भाव-इन्द्रियाँ और इन्द्रियों के विषयभूत पदार्थ शामिल किये हैं।

प्रश्न 35 द्रव्येन्द्रियाँ किसे कहते हैं? उन्हें शरीर के परिणाम को प्राप्त क्यों कहा जाता है?

उत्तर– स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु और कर्ण– इन पाँचों को द्रव्येन्द्रियाँ कहते हैं। ये शरीर के अंग हैं, अतः इन्हें शरीर के परिणाम को प्राप्त कहा जाता है।

प्रश्न 36 भावेन्द्रियाँ किसे कहते हैं?

उत्तर– आत्मा के ज्ञान गुण की वह क्षयोपशमदशा, जो इन्द्रियों के माध्यम से जानने-देखने का काम करती है; उसे भावेन्द्रिय कहते हैं।

प्रश्न 37 इन्द्रियों के विषयभूत पदार्थ से क्या तात्पर्य है?

उत्तर– क्षयोपशम रूप भावेन्द्रिय, द्रव्येन्द्रियों के माध्यम से जिन पदार्थों को जानती है, उन पदार्थों को यहाँ इन्द्रिय कहा गया है। जैसे– इन्द्रियों के माध्यम से दिखाई देने वाले देव, शास्त्र, गुरु; स्त्री, पुत्रादि; कार, मकानादि– सभी पदार्थ। यहाँ यह कहा जा रहा है कि आँख तो आँख है ही, पर

आँखों से दिखाई देने वाले पदार्थ भी आँख ही हैं; इसीप्रकार कान तो कान हैं ही, कानों से सुनाई देने वाले शब्द भी कान ही हैं। इसीप्रकार स्पर्शन, रसना और घ्राण के सम्बन्ध में भी समझना चाहिए।

इसप्रकार यहाँ इन्द्रियों से दिखाई देने वाले सभी पदार्थ **इन्द्रिय** शब्द में शामिल कर लिये गये हैं।

प्रश्न 38 द्रव्येन्द्रियों को जीतने से क्या तात्पर्य है?

उत्तर– द्रव्येन्द्रियों को भेदाभ्यास की प्रवीणता से प्राप्त अन्तरंग में प्रगट अतिसूक्ष्म चैतन्य स्वभाव के अवलम्बन के बल से अपने से सर्वथा भिन्न जानना ही द्रव्येन्द्रियों को जीतना है।

प्रश्न 39 भावेन्द्रियों को जीतने से क्या तात्पर्य है।

उत्तर– भिन्न-भिन्न अपने विषयों के व्यापार से जो विषयों को खण्ड-खण्ड ग्रहण करती हैं, ज्ञान को खण्ड-खण्ड बतलाती हैं; ऐसी भावेन्द्रियों को प्रतीति में आती हुई अखण्ड, एक चैतन्य शक्ति के द्वारा अपने से सर्वथा भिन्न जानना ही भावेन्द्रियों का जीतना है।

प्रश्न 40 इन्द्रियों के विषयभूत पदार्थों को जीतने से क्या तात्पर्य है?

उत्तर– ग्राह्य(ग्रहण करने योग्य) - ग्राहक(ग्रहण करने वाला) लक्षण वाले सम्बन्ध की निकटता के कारण अपने संवेदन के साथ एक जैसे दिखाई देने वाले भावेन्द्रियों के द्वारा ग्रहण किये गये इन्द्रियों के विषयभूत पदार्थों को अपनी चैतन्यशक्ति से स्वयमेव अनुभव में आने वाली भिन्नता के द्वारा अपने से सर्वथा अलग जानना ही इन्द्रियों के विषयभूत पदार्थों को जीतना है।

प्रश्न 41 इन्द्रियों की आधीनता से क्या तात्पर्य है?

उत्तर– अज्ञानी जीव अनादि से इन्द्रियों (द्रव्येन्दियाँ, भावेन्द्रिय और उनके विषयभूत पदार्थ) को आत्मा जानता रहा है, इनमें ही अपनापन स्थापित करता रहा है, इन्हीं में जमा-रमा रहा है; यही जीव की इन्द्रियों की आधीनता है।

प्रश्न 42 सभी इन्द्रियों को जीतने से क्या तात्पर्य है?

उत्तर– ज्ञायक स्वभावी आत्मा इन इन्द्रियों से अत्यन्त भिन्न है, एकत्व में टंकोत्कीर्ण है, अविनश्वर है, प्रत्यक्ष उद्योतपने से सदा अंतर में प्रकाशमान है, स्वत:सिद्ध एवं परमार्थ स्वरूप है- यह अनुभवपूर्वक जानकर, मानकर, उस आत्मा में ही अपनापन हो जाना, उसमें ही जम जाना, रम जाना इन्द्रियों को जीतना है।

प्रश्न 43 प्रथम प्रकार की यह निश्चय स्तुति किस दोष के परिहार पूर्वक होती है?

उत्तर – प्रथम प्रकार की यह निश्चय स्तुति ज्ञेय-ज्ञायक संकर दोष के परिहार पूर्वक होती है। इसे ही जघन्य निश्चय स्तुति कहते है।

प्रश्न 44 ज्ञेय-ज्ञायक संकर दोष से क्या तात्पर्य है?

उत्तर– ज्ञेय अर्थात् जानने में आने वाले पदार्थ। जानने में आने वाले ज्ञेय पदार्थ दो प्रकार के हैं- १. परज्ञेय और २. स्वज्ञेय अर्थात् जानने देखने के स्वभाव वाला आत्मा। आत्मा का स्वभाव स्वपरप्रकाशक होने से वह पर को भी जान सकता है और स्व को भी।जानने वाला आत्मा

अलग है और जानने में आने वाले पर पदार्थ अलग हैं, इन्द्रियाँ अलग हैं– यह न जानकर इन्द्रियों को ज्ञायक जानना और इन्द्रियों के विषयों को ज्ञेय जानना तथा ज्ञायक आत्मा को जानना ही नहीं ज्ञेय–ज्ञायकसंकर दोष है तथा आत्मा और तीन प्रकार की इन्द्रियों को एकमेक मानना, इनमें कोई भेद नहीं कर पाना भी ज्ञेय–ज्ञायकसंकर दोष है।

प्रश्न 45 ऐसे कौन से परज्ञेय हैं, जिन्हें ज्ञायक मान लिया जाता है?

उत्तर– इन्द्रियाँ ऐसी परज्ञेय हैं, जिन्हें ज्ञायक मान लिया जाता है।

प्रश्न 46 ज्ञेय–ज्ञायकसंकर दोष का परिहार कैसे होता है?

उत्तर– तीनों प्रकार की इन्द्रियों को ज्ञेय जानकर आत्मा को उनसे भिन्न जानने, मानने, अनुभव करने से ज्ञेय–ज्ञायकसंकर दोष का परिहार होता है।

प्रश्न 47 तीर्थंकरों की आत्मा के गुणों के आधार पर की गई वचनात्मक स्तुति किस नय की स्तुति है और क्यों?

उत्तर– आत्मा के गुणों के आधार पर की गई स्तुति गुणभेद के आधार पर की गई स्तुति होने से सद्भूत व्यवहारनय की स्तुति है।

प्रश्न 48 शरीर के गुणों के आधार पर की गई स्तुति किस नय की स्तुति है?

उत्तर– शरीर के गुणों के आधार पर की गई स्तुति असद्भूत व्यवहारनय की स्तुति है।

प्रश्न 49 आत्मा का अनुभव कौन से नय की स्तुति है और क्यों?

उत्तर– आत्मा का अनुभव निश्चयनय की स्तुति है; क्योंकि निश्चय स्तुति विकल्पात्मक नहीं होती।

प्रश्न 50 ऐसे तीन शस्त्र बताइए जिनसे इन्द्रियों को भी जीता जाता है और ज्ञेय ज्ञायक को भी भिन्न–भिन्न किया जा सकता है?

उत्तर– तीन शस्त्र निम्न हैं–

१. निर्मल भेदाभ्यास की प्रवीणता से प्राप्त अन्तरंग में प्रगट अतिसूक्ष्म चैतन्य स्वभाव।

२. प्रतीति में आती हुई अखण्ड चैतन्य शक्ति।

३. स्वयं अनुभव में आने वाला चैतन्य शक्ति का असंगपना।

गाथा 32–33

प्रश्न 51 जितमोह किसे कहते हैं?

उत्तर– जो मुनि मोह को जीतकर अपने आत्मा को ज्ञान स्वभाव के द्वारा अन्य द्रव्यभावों से भिन्न जानता है, उस मुनि को जीतमोह कहते हैं।

प्रश्न 52 क्षीणमोह किसे कहते हैं? अथवा तीसरी निश्चय स्तुति कौनसी है?

उत्तर– जिसने मोह को जीत लिया है, ऐसे साधु के सब मोह क्षीण होकर सत्ता में से नष्ट हों, तब उस साधु को क्षीण मोह कहते हैं। यह तीसरी निश्चय स्तुति है।

प्रश्न 53 दूसरे प्रकार की और तीसरे प्रकार की निश्चय स्तुति में

क्या अंतर है?

उत्तर– दूसरी स्तुति भाव्य-भावक दोष के परिहार पूर्वक होती है, यह मध्यम निश्चय स्तुति है और तीसरी स्तुति भाव्य-भावक के अभाव पूर्वक होती है। यह उत्कृष्ट निश्चय स्तुति है।

प्रश्न 54 भाव्य-भावक से क्या तात्पर्य है?

उत्तर– राग-द्वेषरूप परिणमित आत्मा भाव्य है और उदय में आया मोहकर्म भावक है।

प्रश्न 55 भाव्य-भावक संकर दोष क्या है?

उत्तर– भाव्य और भावक- दोनों का शुद्ध जीव के साथ जो संयोग सम्बन्ध है, वह ही भाव्य-भावक संकर दोष है।

प्रश्न 56 भाव्य-भावक संकर दोष का परिहार कैसे होता है?

उत्तर– स्वसंवेदन ज्ञान के बल से भाव्य-भावक संकर दोष का परिहार होता है। भाव्य-भावक परिहार में राग-द्वेष का उपशम होता है, पूर्णतः अभाव नहीं।

प्रश्न 57 भाव्य-भावक संकर दोष का अभाव कैसे होता है?

उत्तर– ज्ञान स्वभाव के अत्यंत उग्र आश्रय से राग-द्वेष को जड़मूल से नष्ट कर देने से भाव्य-भावक संकर दोष का अभाव होता है।

प्रश्न 58 तीनों स्तुति में से कौनसी स्तुति किस-किस गुणस्थान में होती है?

उत्तर– प्रथम निश्चय स्तुति चौथे गुणस्थान से लेकर सातवे

गुणस्थान के स्वस्थान अप्रमत्त भाग तक होती है।
दूसरी निश्चय स्तुति उपशम श्रेणी वालों के होती है।
तीसरी निश्चय स्तुति क्षपक श्रेणी वालों के होती है।

प्रश्न 59 निश्चय स्तुति का फल कौन सा गुणस्थान है?

उत्तर– निश्चय स्तुति का फल तेरहवाँ गुणस्थान है।

गाथा 34–35

प्रश्न 60 प्रत्याख्यान किसे कहते हैं? वास्तविक प्रत्याख्यान क्या है?

उत्तर– त्याग को प्रत्याख्यान कहते हैं। परपदार्थों को 'पर' जानना ही वास्तविक प्रत्याख्यान है। जब हम यह जान लेते हैं कि यह पदार्थ मुझसे भिन्न हैं, पर हैं, तो उनका त्याग हो ही गया; क्योंकि अज्ञान में जिन पदार्थों को अपना जाना–माना था, उन्हें अपना जानना–मानना ही छोड़ना है। यही पर का त्याग है, इसलिए स्थिर हुआ ज्ञान ही प्रत्याख्यान है।

प्रश्न 61 रागादि भावों को पर जान लेने पर भी रागादि भावों का संयोग देखा जा सकता है क्या?

उत्तर– हाँ, रागादि भावों को पर जान लेने पर भी कुछ काल तक रागादि भावों का संयोग देखा जा सकता है; पर उनसे अपनापन पूरी तरह से टूट जाता है। अपनापन टूटते ही अनंतानुबंधी संबंधी राग भी नियम से छूट जाता है।

प्रश्न 62 क्या श्रद्धा, ज्ञान, चारित्र की उत्पत्ति एवं पूर्णता एक साथ

हो सकती है? उनमें काल भेद हो सकता है या नहीं?

उत्तर– श्रद्धा, ज्ञान, चारित्र की शुद्धि एक साथ ही आरंभ होती है। यद्यपि उनमें आरंभ व उत्पत्ति में काल भेद नहीं होता; किन्तु इनकी पूर्णता में काल भेद हो सकता है।

प्रश्न 63 सम्यग्दर्शन की पूर्णता कौन से गुणस्थान में हो सकती है? और क्यों?

उत्तर– सम्यग्दर्शन चौथे गुणस्थान में पूर्ण हो सकता है; क्योंकि क्षायिक सम्यग्दर्शन चौथे गुणस्थान में ही हो जाता है।

प्रश्न 64 सम्यग्ज्ञान कौनसे गुणस्थान से आरंभ हो जाता है और पूर्णता कौनसे गुणस्थान में होती है? कारण सहित बताइए।

उत्तर– सम्यग्ज्ञान चौथे गुणस्थान से ही आरंभ हो जाता है और पूर्णता तेरहवें गुणस्थान में होती है; क्योंकि क्षायिकज्ञान की प्राप्ति, सर्वज्ञता की प्राप्ति और केवलज्ञान की प्राप्ति तेरहवें गुणस्थान में होती है।

प्रश्न 65 सम्यग्चारित्र की पूर्णता कौनसे गुणस्थान में होती है और क्यों?

उत्तर– सम्यग्चारित्र की पूर्णता बारहवें गुणस्थान में होती है; क्योंकि पूर्ण वीतरागता बारहवें गुणस्थान में ही प्रगट होती है।

गाथा 36

प्रश्न 66 इस गाथा में मोह से निर्मम किसे और क्यों कहा है?

उत्तर– इस गाथा में ज्ञानी को मोह से निर्मम कहा है; क्योंकि वह जानता है कि मोह आकुलता स्वाद वाला है और मैं तो

निराकुल स्वभाव वाला एक उपयोगमय हूँ।

प्रश्न 67 ३६वीं गाथा में किन भावों से भेदज्ञान कराया गया है?

उत्तर– इस गाथा भावक-भाव भावों से भेदज्ञान कराया गया है।

प्रश्न 68 ज्ञान मलिन कब दिखाई देता है?

उत्तर– जब राग-द्वेष रूप कलुषता ज्ञान में ज्ञात होती है, तो ज्ञान मलिन दिखाई देता है। ध्यान रहे ज्ञान मलिन प्रतीत होता है, मलिन होता नहीं है।

प्रश्न 69 भावक-भाव से भेदज्ञान कब होता है?

उत्तर– जब जीव यह जानता है कि मोहकर्म जड़ पुद्गल द्रव्य है, उसका उदय कलुषभाव रूप है। वह कलुषभाव भी मोहकर्म का भाव होने से पुद्गल का ही विकार है। जब यह भाव चैतन्य के उपयोग के अनुभव में आता है, तब उपयोग भी विकारी होकर रागादि रूप मलिन दिखाई देता है।

जब जीव यह जान लेता है कि मैं तो ज्ञान-दर्शन उपयोग मात्र हूँ और कलुषता राग-द्वेष- मोह रूप है; वह द्रव्यकर्म रूप जड़ पुद्गल द्रव्य की है, तब भावक-भावों से भेदज्ञान होता है।

गाथा 37

प्रश्न 70 इस गाथा में धर्मादि द्रव्यों से निर्मम किसे और क्यों कहा है?

उत्तर– इस गाथा में ज्ञानी को धर्मादि द्रव्यों से निर्मम कहा है; क्योंकि ज्ञानी जानता है कि धर्म, अधर्म, आकाश, काल, पुद्गल व अन्य जीव- ये सभी मुझसे भिन्न परद्रव्य हैं,

बाह्य तत्त्व है; अतः मेरे कुछ भी नहीं है। मैं तो अपने स्वभाव को नहीं छोड़ता हुआ, अपने में स्थित रहता हुआ, अनाकुल आत्मा का अनुभव करता हुआ ज्ञानस्वभावी अन्तरंग तत्त्व हूँ।

प्रश्न 71 इस गाथा में किन भावों से भेदज्ञान कराया गया है?

उत्तर– इस गाथा में परज्ञेय भावों से भेदज्ञान कराया गया है।

प्रश्न 72 परज्ञेय भाव कौन-कौन से हैं? अथवा परज्ञेय भावों में क्या-क्या सम्मिलित होते हैं?

उत्तर– परज्ञेय भावों में पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश, काल और स्वयं को छोड़कर अन्य सभी जीव सम्मिलित होते हैं अन्य सभी जीवों में सभी संसारी जीव और अरहंत, सिद्ध आदि सभी पंचपरमेष्ठी भी आ जाते हैं। शरीर, मन, वाणी भी ज्ञेय ही हैं।

प्रश्न 73 ज्ञेय भावों से भेदज्ञान होने से क्या तात्पर्य है?

उत्तर– ज्ञेय भिन्न हैं और ज्ञान भिन्न है– यह जानना ही ज्ञेय भाव से भेदज्ञान होना है।

जब ज्ञानी जीव यह जानते हैं कि ये धर्मादि परपदार्थ मेरे नहीं हैं; क्योंकि ये मेरे स्वभाव से भिन्न हैं, बहिरंग तत्त्व हैं। मैं ज्ञान स्वभावी अन्तरंग तत्त्व हूँ। यद्यपि स्व और पर दोनों एक समय ही ज्ञान में ज्ञात हो रहे हैं; तथापि दोनों का स्वाद भिन्न-भिन्न है। भिन्न-भिन्न स्वाद के कारण मैं धर्मादि द्रव्यों से एवं मेरे से भिन्न जीव द्रव्यों के प्रति पूर्णतः निर्मम हूँ; क्योंकि मैं एकत्व को प्राप्त होने से सदा ही ज्यों का त्यों

स्थिर रहता हूँ। अपने स्वभाव को नहीं छोड़ता हूँ। इसप्रकार पर में अपनापन टूटना, एकत्व टूटना और अपने में अपनापन आना, एकत्व आना ही ज्ञेय भाव से भेदज्ञान होना है।

प्रश्न 74 क्या ज्ञेय-ज्ञायक संबंध वास्तविक संबंध है? उदाहरण देकर समझाइये।

उत्तर– हमने पर को जाना और परपदार्थ हमारे जानने में आए-इस क्रिया को ज्ञेय-ज्ञायक संबंध कहा जाता है। यद्यपि इस ज्ञेय-ज्ञायक संबंध को संबंध कहा जाता है, पर यह कोई संबंध नहीं है; क्योंकि इसमें कोई बंधन नहीं है।

परपदार्थ के पास जाये बिना और पर पदार्थ भी पास में आये बिना ही ज्ञान का स्वभाव पर को जानने का है। पर को जानते समय ज्ञेय, ज्ञेय में रहता है; ज्ञान, ज्ञान में रहता है। ज्ञान ज्ञेय में नहीं जाता और ज्ञेय ज्ञान में नहीं आता। जब दोनों पूर्ण स्वतंत्र ही रहे तो फिर किस बात का संबंध? जिसप्रकार प्लेन या ट्रेन में सफर करते समय यदि हमने पास की सीट पर बैठे किसी व्यक्ति को जाना, तो क्या उससे हमारा संबंध हो जाता है? क्या उसके किये गये किसी अपराध के हम भागीदार हो सकते हैं? जेल के बंधन के हकदार हो सकते हैं? नहीं, न। उसीप्रकार आत्मा का पर को जानने रूप ज्ञेय-ज्ञायक संबंध को संबंध कहा जाता है, पर यह कोई संबंध नहीं है, इसमें कोई बंधन नहीं है। इसलिए केवली लोकालोक को जानते हुए भी पर से असंबंधित ही रहते हैं।

गाथा 38

प्रश्न 75 सम्यग्दृष्टि ज्ञानी जीव की चिंतन प्रक्रिया कैसी होती है?

उत्तर– ज्ञानी जीव निरंतर विचार करता है कि अन्य परद्रव्य किंचित् मात्र मेरे नहीं हैं। मैं तो सदा उनसे भिन्न अरूपी हूँ, एक ही हूँ, शुद्ध ही हूँ, दर्शन-ज्ञानमय ही हूँ।

प्रश्न 76 उक्त प्रकार के चिंतन से ज्ञानी को क्या लाभ है?

उत्तर– ज्ञानी के उक्त प्रकार के निरंतर चिंतन से उपशमित मोह के पुनः उत्पन्न होने के अवसर समाप्त हो जाते हैं।

प्रश्न 77 क्या परपदार्थों के जानने मात्र से मोह उत्पन्न होता है?

उत्तर– नहीं, परपदार्थों को जानने मात्र से मोह उत्पन्न नहीं होता, मोह तो उन्हें अपना जानने से, मानने से, उनमें जमने-रमने से उत्पन्न होता है।

प्रश्न 78 इस गाथा में पदार्थों की स्वरूप संपदा और जीव की स्वरूप संपदा किसे कहा है?

उत्तर– परपदार्थ प्रमेयत्व गुण के कारण ज्ञान के ज्ञेय बनते हैं- यह उनकी स्वरूप संपदा है और परपदार्थों को जानना जीव की स्वरूप संपदा है।

प्रश्न 79 गुरु के द्वारा निरंतर समझाये जाने से क्या तात्पर्य है? क्या गुरु २४ घंटे शिष्य को समझाने बैठ सकते हैं?

उत्तर– नहीं, गुरु लगातार निरंतर २४ घंटे शिष्य को समझाने बैठ नहीं सकते; क्योंकि उनकी अपनी स्वयं की दिनचर्या होती है, नियम होते है।

गुरु के द्वारा अपने उपदेश देने के समय पर आत्मा की बात को अच्छी तरह समझा देने पर जब शिष्य को बात समझ में आकर आत्मा को प्राप्त करने की लगन लग जाती है, तब वह उसी बात का निरंतर घोलन करता है, चिंतन-मनन करता है, परस्पर चर्चा-वार्ता करता है; उसके ज्ञान में निर्मलता बढ़ती जाती है, उसका ज्ञान आत्मसम्मुख होता है और उसे आत्मानुभूति हो जाती है।- इसी का नाम गुरु के द्वारा निरंतर समझाया जाना है।

इसप्रकार निरंतर समझाने का अर्थ शिष्य के अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग से है।

प्रश्न 80 भिन्नता कितने प्रकार की होती है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– भिन्नता तीन प्रकार की होती है–

१. एक द्रव्य दूसरे द्रव्य से अत्यंत भिन्न है।

२. पुण्य-पाप के विकारी भावों से आत्मा भिन्न है।

३.निर्मल पर्याय से भी आत्मा भिन्न है।

पहले प्रकार में स्वद्रव्य-परद्रव्य की भिन्नता, दूसरे प्रकार में विकार भाव और स्वभाव की भिन्नता तथा तीसरे प्रकार में द्रव्य और निर्मल पर्याय की भिन्नता बताई गई है।

प्रश्न 81 आचार्य अमृतचंद्र ने इस गाथा में आये विशेषणों को कितने भागों में विभक्त किया है? विस्तार से बताइये।

उत्तर– आचार्य अमृतचंद्र ने इस गाथा में आये विशेषणों को दो मुख्य भागों में विभाजित किया है–

१. निर्विकल्प अनुभूति के समय आत्मा को स्वरूप संचेतन

कैसा होता है और २. निर्विकल्प अनुभूति के पश्चात् किस प्रकार की चिंतन प्रक्रिया चलती है? दर्शन-ज्ञान विशेषण को अभेद, अखंड, एक चैतन्यमात्र ज्योति रूप में प्रस्तुत करते हुए आचार्य अमृतचंद्र उत्तमपुरुष में बात करते हुए कहते हैं कि- ''मैं ज्ञान मात्र, चैतन्य मात्र आत्मा हूँ- यह मेरे अनुभव से ही प्रत्यक्ष ज्ञात होता है।'' प्रकारान्तर से आचार्यदेव कहना चाह रहे हैं कि ज्ञान मात्र आत्मा ही आनन्द सहित अनुभव में आता है।

इसप्रकार आनन्द सहित ज्ञान की अनुभूति के पश्चात् ज्ञानी हुआ जीव विचार करता है कि मैं चिन्मात्र स्वभाव के कारण गति, गुणस्थान आदि क्रम रूप भावों और कषाय, लेश्या, मार्गणास्थान आदि अक्रम रूप व्यवहारिक भावों से भेदरूप नहीं होता; अतः मैं अखण्ड एकरूप हूँ

मैं शुद्ध हूँ; क्योंकि नर-नारकादि जीव के विशेष और अजीव, पुण्य, पाप, आस्रव, बंध, संवर, निर्जरा, मोक्षस्वरूप व्यवहारिक नव तत्त्वों से टंकोत्कीर्ण एक ज्ञान स्वभाव के द्वारा अत्यंत भिन्न हूँ।

मैं दर्शन-ज्ञानमय हूँ; क्येंकि चिन्मात्र होने के कारण सामान्य-विशेष उपयोगात्मकता का उल्लंघन नहीं करता।

मैं निश्चय से अरूपी हूँ; क्योंकि मैं स्पर्शादि रूप स्वयं परिणमित नहीं होता।

इसप्रकार मैं उक्त सभी से भिन्न निजज्ञान स्वरूप का आनंद सहित अनुभव करता हूँ। ●

जैन बाल साहित्य के उत्कृष्ट लेखन हेतु अखिल भारतवर्षीय दि. जैन विद्वत्परिषद् द्वारा **विद्वत्‌रत्न की उपाधि** से सम्मानित विद्वत्‌रत्न डॉ. शुद्धात्मप्रभा टड़ैया को 8 मार्च 2008 को महिला दिवस के अवसर पर मुम्बई की महापौर के शुभ कर कमलों से भी सम्मानित किया गया है। आपका जन्म अशोकनगर (म.प्र.) में 30 जनवरी 1958 को हुआ।

आपके द्वारा एम.ए. में लघुशोध निबंध के रूप में लिखी गई पुस्तक मात्र 19 वर्ष की अवस्था (27-11-1977) में प्रकाशित हो गई।

आधुनिक बाल जैन साहित्य की प्रणेता आपने **जैन सिद्धान्तों को सर्वप्रथम पहेलियों के रूप में** प्रस्तुत कर जैन बाल साहित्य को नई दिशा प्रदान की है। खेल-खेल में **गेम्स के माध्यम** से बच्चों में जैन सिद्धान्तों का बीजारोपण करने का प्रयास सर्वप्रथम आपके द्वारा किया गया।

आपके द्वारा लिखी गई बाल पुस्तकों में पहेलियों, कविताओं और प्रश्नोत्तर शैली में लिखे गए पाठों के माध्यम से तत्त्वज्ञान एवं भेदज्ञान कराया गया है।

आपने विभिन्न आयुवर्ग को ध्यान में रखकर भिन्न-भिन्न शैलियों में अध्यात्म को जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास किया है। गद्य-शैली, पद्य-शैली, चम्पू (गद्य-पद्य मिश्रित) शैली, पत्रशैली, डायरीशैली, छोटे-छोटे मंचन योग्य नाटक, बड़े-बड़े नाटक आदि साहित्य की विभिन्न विधाओं के दर्शन आपकी कृतियों में होते हैं।

आपके निर्देशन में सर्वप्रथम युवाओं के लिए देश भर में **art of happy living** नाम से सेमीनार कम वर्कशॉप के अनेकों आयोजन भी किए जाते हैं।

आपके निर्देशन में 'परमागम ऑनर्स' शास्त्री कोर्स का आरम्भ जुलाई 2016 से हो गया है। इस कोर्स में जैन-अध्यात्म का व्यवस्थित, नियमित अध्ययन और जैन सिद्धान्तों को जीवन में उतारने का तरीका गुरुओं के मार्गदर्शन में सिखाया जाता है। इसमें नई परीक्षा प्रणाली अपनाते हुए Open Book Exam होता है। जिनागम के अध्ययन-अध्यापन के लिए आधुनिक इन्फोर्मेशन टेक्नोलॉजी का उपयोग करते हुए Internet या Teleconfrence call के द्वारा कक्षायें ली जाती हैं। इसका संचालन श्रीमती स्वानुभूति द्वारा किया जाता है।

वर्तमान में आप पी.एच.डी. की गाईड भी हैं। किसी भी विषय से पी.जी. किए हुए व्यक्ति यदि जैनदर्शन में पी.एच.डी. करना चाहते हैं तो आपके निर्देशन में कर सकते हैं।

सम्प्रति आप अपने परिवार के साथ मुम्बई में रहती हैं। जहाँ आपके पति श्री अविनाशकुमार टड़ैया का हीरे-जवाहरात एवं डायमंड ज्वैलरी का व्यवसाय है।

आपके द्वारा अभी तक छोटी-बड़ी 56 पुस्तकें लिखी गईं हैं।